भवानी प्रसाद मिश्र का काव्य

(हिंदी प्रतिष्ठा बी.ए. द्वितीय बर्ष, पत्र 4)

डॉ. बिभा कुमारी, विश्वेश्वर सिंह जनता कॉलेज, राजनगर

भवानी प्रसाद मिश्र का जन्म 29 मार्च 1913 ई. को मध्यप्रदेश के होशंगाबाद (टिगरिया) गाँव में हुआ था। अज्ञेय द्वारा संपादित चार तार-सप्तकों में से दूसरे यार-सप्तक के ये प्रमुख कवि हैं। कवि होने के साथ-साथ ये गाँधीवादी विचारक रहे, इनके साहित्य पर गाँधी जी का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है।

1930 ई. के आसपास इन्होंने कविताएँ लिखनी आरंभ कर दी थी। 1932-33 में वे माखनलाल चतुर्वेदी के संपर्क में आए, उन्होंने 'कर्मवीर' में उनकी कविताएँ प्रकाशित कीं, हंस में भी भवानी प्रसाद मिश्र की अनेक कविताएँ प्रकाशित हुईं, तत्पश्चात अज्ञेय ने दूसरे सप्तक में इन्हें शामिल किया। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं –

'गीतफरोश' 'चकित है दुख' 'गाँधी पंचशती' 'अंधेरी कविताएँ' 'बुनी हुई रस्सी' 'खुशबू के शिलालेख' 'त्रिकाल संध्या' 'अनाम तुम आते हो' 'फसलें और फूल' 'मानसरोवर' 'दिन' 'संप्रति' 'नीली रेखा तक' इत्यादि। भवानी प्रसाद मिश्र ने कविता के अतिरिक्त संस्मरण, निबंध तथा बालसाहित्य की भी रचना की।

उन्होंने कविता को आमजनों से जोड़ा और कविता को आमजनों से जोड़ा और कविता को भाषा की कृत्रिमता, अलंकारों के चमत्कार से बचाकर बोलचाल की भाषा के निकट लाने का प्रयास किया। उन्होंने कहा –

"जिस तरह तू बोलता है उस तरह तू लिख।"

कथन की सादगी उनकी कविताओं की प्रमुख विशेषता है। विचारों से वे गाँधीवादी थे, एक कवि के रूप में वे मानववादी कवि थे। उनके काव्य का विषय अत्यंत व्यापक है। आम जन-जीवन, घरेलू प्रसंग, देश-विदेश की परिस्थितियां, इतिहास, पुराण, अध्यात्म इत्यादि विषय इनके काव्य के दायरे में है। इन्होंने भौतिक सुखों को अधिक महत्व नहीं दिया। यहाँ तक कह दिया कि सुख अगर मेरे घर में आ जाए तो उसे बैठाएंगे कहाँ? आजादी मिलने के बाद देशवासी गाँधी जी के बताए मार्ग से विचलित होने लगे। भवानी प्रसाद मिश्र गाँधी जी के विचारों में आकंठ डूबे थे, उनके बताए मार्ग पर चलना सभी देशवासियों का कर्तव्य मानते थे, परंतु जिस तीव्र गति से देशवासी पथ से भटक रहे थे, भवानी प्रसाद मिश्र उससे क्षुब्ध और पीड़ित थे। इस पीड़ा की अभिव्यक्ति उन्होंने इन पंक्तियों में की है-

"तुम्हें बड़ी बातों का ज्यादा मोह हो गया

छोटी बातों से संपर्क खो गया

धुनक-पींज कर, कात-बीन कर

अपनी चादर खुद न बनाई

बल्कि दूर से कर्ज लेकर मंगाई

और नतीजा चाचा-भतीजा

दोनों के कल्पनातीत है

यह कर्जे की चादर जितना ओढ़ो

उतनी कड़ी शीत है।"

भवानी प्रसाद मिश्र की कविताएँ समाज की परिधि पर खड़े विपन्न, लाचार, गरीब लोगों को प्रेरणा देती है। उन्हें आगे बढ़ने की हिम्मत देती है। अपनी कविताओं के माध्यम से वे भारतीय संस्कृति को विश्व के हर कोने तक पहुँचाने का प्रयास करते हैं। बढ़ते बाज़ारवाद और उपभोक्तावादी संस्कृति के मध्य एक कवि अपनी रचनाएँ बेचने को विवश हो जाता है, यहाँ तक कि अन्य बाजारू उत्पाद की तरह उसे माँग के अनुसार उत्पादन और आपूर्ति करनी पड़ती है। कवि के मन की छटपटाहट को 'गीतफरोश' कविता में उन्होंने अभिव्यक्त किया है-

"यह गीत सख़्त सरदर्द भुलाएगा

यह गीत पिया को पास बुलाएगा

यह मसान में भूख जगाता है

यह गीत भुवाली की है हवा हुज़ूर

यह गीत तपेदिक की है दवा हुज़ूर।"

भवानी मिश्र की कविताओं में प्रकृति-चित्रण सजीव रूप में हुआ है। सुबह का सूरज कवि को मित्र की तरह दस्तक देकर जगाता है। सूरज के साथ वह हाथ में हाथ डालकर घूमता है। प्रकृति के समस्त अवयवों के साथ कवि का पूर्ण सामंजस्य है। उसे प्रकृति से इतना लगाव है कि उसके मनोभाव प्रकृति के साथ एकाकार हो जाते हैं। नदी, पर्वत, जंगल इन सबसे कवि का गहरा रिश्ता है। 'सतपुड़ा के जंगल' कविता प्रकृति-चित्रण की दृष्टि से उत्कृष्ट कविता है।

भवानी प्रसाद मिश्र की कविताएँ भाव और शिल्प दोनों ही दृष्टि से उत्कृष्ट है तथा आमजन के करीब हैं। उनकी कविता की सरलता, सहजता और भाषाई सादगी पाठकों को विशेष रूप से पसंद है। उन्होंने कहीं भी कविता को आलंकारिकता के बोझ से दबने नहीं दिया है। उनकी कविताएँ सहज ही पाठकों के हृदय तक पहुँच जाती है। सन 1972 में 'बुनी हुई रस्सी' के लिए इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया। अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से इन्हें सम्मानित किया गया। भारत सरकार द्वारा पद्मश्री भी प्रदान किया गया। 1981-82 में उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान सम्मान से सम्मानित हुए, 1983 में मध्यप्रदेश शासन के 'शिखर सम्मान' से सम्मानित हुए। 20 फरवरी 1985 को इनका निधन हो गया, परंतु अपनी रचनाओं के माध्यम से वे अपने पाठकों के हृदय में जीवित हैं और सदैव जीवित रहेंगे।